विश्व न्याय मंदिर

19 मार्च 2025

विश्व के बहाइयों को

परमप्रिय मित्रों

बहाई जगत द्वारा विकसित किए जा रहे समृद्ध समुदायों की प्रकृति पर परिवार के लिए गहरे निहितार्थ हैं। यह परिवार ही है जहां व्यक्ति का जन्म होता है और उसका पालन-पोषण होता है, और परिवार में ही व्यक्ति सीखना शुरू करता है कि कैसे दूसरों के साथ मिलकर रहा जाए। पारिवारिक इकाई समुदाय और उससे आगे संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का मूल निर्माण खंड है। इसलिए, मानव जाति की परिपक्वता के युग की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बनाए गए किसी समाज को परिवार की एक परिपक्व अवधारणा और उस अवधारणा से प्राप्त अंतर्दृष्टि को राष्ट्र और दुनिया को आकार देने वाले रिश्तों तक विस्तारित करने की क्षमता, दोनों की आवश्यकता होती है। अब्दुल-बहा बताते हैं, "एक परिवार एक सूक्ष्म राष्ट्र है।" "परिवार को घेरी परिस्थितियाँ राष्ट्र को घेर लेती हैं।" इसलिए, पारिवारिक जीवन के एक नए पैटर्न के बारे में सीखना, प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति की निर्मुक्ति के बारे में सीखने के प्रयास का एक अभिन्न अंग है।

ऐतिहासिक रूप से, परिवार ने मानव सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों की आवश्यकताओं के प्रत्युत्तर में अलग-अलग स्वरूप धारण किए हैं। जैसे-जैसे समाज आगे बढ़ा, व्यवस्थाएँ और परिभाषाएँ जो पिछले युग में लाभकारी हो सकती थीं, अपनी सीमा तक पहुँच गईं और मानव विकास के अगले चरण के लिए अब उपयुक्त नहीं रहीं। माता-पिता की अपेक्षाएँ जो इतिहास के एक कालखंड के लिए उपयुक्त रहीं दूसरे कालखंड में उनके बच्चों की योग्यताओं के विकास में अड़चन बन सकती हैं। इसी तरह, रिश्तेदारी समूहों के भीतर कुछ मज़बूत निष्ठाएँ जो उन्हें एक चरण में उन्नति में सहायक थीं, बाद के चरण में व्यापक सामाजिक व्यवस्थाओं के भीतर एकता के लिए बाधा बन सकती हैं। और कुछ लैंगिक भूमिकाएँ जो मानव विकास के प्रारम्भिक चरण की विशेषता थीं, अंततः महिलाओं और समाज की उन्नति में अवरोधक बन सकती हैं। अब्दुल-बहा बताते हैं कि पिछले युगों के विचारों और सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मानवता को "अब नए गुणों और शक्तियों, नए नैतिक मानकों, नई क्षमताओं से ओत-प्रोत होना चाहिए।" क्योंकि "युवाकाल के उपहार और आशीर्वाद, यद्यपि मानव जाति की किशोरावस्था के लिए समीचीन और पर्याप्त थे, अब इसकी परिपक्वता की आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ हैं।" अतः विश्व भर के बहाई समुदायों के लिए चुनौती यह है कि वे अपने समाजों में प्रचलित वर्तमान प्रथाओं का परीक्षण करें, दिव्य शिक्षाओं के प्रकाश में उनका मूल्यांकन करें, अवांछनीय प्रवृत्तियों को निकाल फेंकें तथा नए युग की आवश्यकताओं के अनुरूप पारिवारिक जीवन के नए पैटर्न स्थापित करना सीखें।

बेशक, इस अपेक्षाकृत प्रारंभिक चरण में पारिवारिक व्यवस्थाओं की प्रकृति का वर्णन करना संभव नहीं है जो अंततः धर्मकाल की पूर्णता में अवश्य ही प्रकट होना होगा। और विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न समाज, मजबूत परिवारों की महत्ता को स्वीकार करते, अनेक प्रकार की शक्तियों का सामना करते हैं जो विभिन्न तरीकों से परिवार के महत्व को कम करती है। फिर भी, जैसे जैसे बहाई जगत दिव्य

शिक्षाओं से प्राप्त कुछ आवश्यक अंतर्दृष्टियो को लागू करने की क्षमता विकसित करने की गति बढ़ाएगा, परिवारों के भीतर और उनके मध्य जीवन के एक नए पैटर्न की ओर बढ़ने में योगदान देने वाली सीखने की प्रक्रिया में तेजी आएगी।

विचारणीय प्रश्नों में निम्नलिखित शामिल हैं: बहाई पारिवारिक जीवन की विशेषताएँ क्या हैं और आज के समाज में पारिवारिक जीवन को जिस तरह से समझा जाता है, उससे वे किस तरह अलग हैं? बहाई विवाह की विशिष्ट प्रकृति क्या है और यह पारिवारिक जीवन को किस तरह से बढ़ावा देता है? बहाई परिवार पड़ोस और गाँवों तथा उससे परे रूपांतरण की प्रक्रिया में किस तरह से योगदान करते हैं? बहाई परिवारों के सामने वर्तमान में कौन-कौन सी समस्याएँ और बाधाएँ हैं जो उन्हें इस लक्ष्य को प्राप्त करने से रोकती हैं? दिव्य योजना के वर्तमान चरण की कार्य-योजना की रूपरेखा किस तरह से दोनों, - पारिवारिक जीवन को मजबूत बनाती है और जीवंत परिवारों के लिए समुदाय निर्माण की प्रक्रिया में योगदान करने के अवसर पैदा करती है?

*

परिवार की नई अवधारणा विवाह की नई अवधारणा से आरंभ होती है। बहाउल्लाह बताते है कि विवाह न केवल “विश्व के लोगों के लिए जीवन को बनाए रखने की कुंजी” है, बल्कि “उनकी नियति को पूर्ण करने का अभेद्य साधन” भी है।

बहाईयों के लिए, विवाह केवल एक शारीरिक बंधन ही नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक भी है, जिसका इस दुनिया में और अगली दुनिया में भी प्रभाव पड़ता है। बहाई विवाह, अब्दुल-बहा बताते हैं, “दो पक्षों की एक दूसरे के प्रति प्रतिबद्धता और उनके मन और हृदय का परस्पर लगाव है”, ताकि वे “एक दूसरे के आध्यात्मिक जीवन को सतत बेहतर बना सकें” और ताकि वे “एक दूसरे के साथ सबसे करीबी संगति में रह सकें” और “यहाँ तक कि एक ही आत्मा की भांति हो जाएँ।” बहाई विवाह में, दो आत्माएँ एक दूसरे की सहायता करना सीखती हैं ताकि दोनों अपने दोहरे नैतिक उद्देश्य-अपनी अंतर्निहित ईश्वर-प्रदत्त क्षमताओं को विकसित करना और एक निरंतर आगे बढ़ती सभ्यता में योगदान देना - प्राप्त कर सकें। अपने विवाह समारोह से शुरू होने वाले युगल के संबंध, स्थान और काल से होते हुए, अन्य लोगों के मध्य अनगिनत नए संबंधों को प्रभावित करेगा जो रचनात्मक रूप से जीवन और समुदायों को नया स्वरूप दे सकते हैं।

विवाह पर बहाई दृष्टिकोण समाज में प्रचलित स्वच्छंद और प्रतिगामी दृष्टिकोणों से उत्पन्न होने वाले दवंदों से परे है। बहाई विवाह में, प्रेम, समानता, अंतरंगता, निष्ठा, यौन संबंध, संतानोत्पत्ति और संतान-पालन समाहित होते हैं और उनके अंतर्संबंध प्रगाढ़ होते हैं, जिससे व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण के लिए एक सुरक्षा-दुर्ग स्थापित होता है। स्वच्छंद विचारों से प्रेरित सामाजिक प्रथाएँ इन मानव उत्थान के लिए आवश्यक विशेषताओं में अलगाव कर विवाह और परिवार को कमजोर करती हैं, जबकि प्रतिगामी प्रथाएँ परिवार के सदस्यों पर शोषण करने के लिए इनमें से किसी एक या अधिक विशेषताओं पर अत्यधिक जोर देती हैं या उसे विकृत करती हैं। दैवीय शिक्षाओं का पालन ऐसी समस्याओं को हल करने में मदद करता है। पवित्र लेखों में पाए जाने वाले बहाई विवाह की सभी विशेषताओं के निहितार्थों के बारे में विश्व भर में विविध सांस्कृतिक परिस्थितियों में बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, बहाई विवाहित जीवन के एक नए पैटर्न के विकास के केंद्र में स्त्री और पुरुष की समानता का

सिद्धांत है। जैसे-जैसे यह सिद्धांत विवाह के अधीन पत्नी और पति के बीच लागू होता जाता है, रिश्ता सशक्त होगा और फले-फूलेगा, और लड़कियों और लड़कों को समानता और इसकी व्यावहारिक अभिव्यक्ति की नई समझ के साथ पाला पोसा जाएगा। इस प्रकार इस सिद्धांत के प्रभाव धीरे-धीरे भविष्य की पीढ़ियों तक फैलेंगे और महिलाओं की उन्नति में तब तक योगदान देंगे जब तक कि अब्दुल-बहा की यह अपेक्षा कि महिलाएं "विश्व के मामलों में पूरी तरह से और समान रूप से भाग लेंगी" समग्रता से साकार नहीं हो जाती।

विवाह से परिवार का निर्माण होता है। और बहाई परिवार के सदस्यों को जोड़ने वाले स्वस्थ संबंध न्याय और पारस्परिकता पर आधारित होते हैं। प्रत्येक सदस्य को अवश्य ही उसके अपेक्षित अधिकार प्राप्त हों; प्रत्येक अपनी धारित जिम्मेदारियों को पूरा करे। अब्दुल-बहा बताते हैं, "बहाउल्लाह की शिक्षाओं के अनुसार परिवार, एक मानवीय इकाई होने के नाते, अवश्य ही पवित्रता के नियमों के अनुसार शिक्षित होना चाहिए।" "परिवार के बंधन की अखंडता लगातार ध्यान में रखी जानी चाहिए, और व्यक्तिगत सदस्यों के अधिकारों का उल्लंघन नहीं किया जाना चाहिए।" परिवार के सदस्यों के बीच इन स्वस्थ रिश्तों को सचेत रूप से विकसित करने की आवश्यकता होती है।

बहाई परिवार में, विवाहित दंपत्ति सच्चे सहभागी होते हैं; एक दूसरे के अधीन नहीं होता। वे मिलकर जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं - चाहे वे आध्यात्मिक हों, भौतिक हों या सामाजिक - प्रार्थना, अध्ययन, परामर्श और कार्यों की समीक्षा के माध्यम से। उदाहरण के लिए, बच्चों की शिक्षा से संबंधित निर्णयों पर विचार करें। बहाई पवित्र लेख माँ को बच्चे की पहली शिक्षिका के रूप में पहचान करते हैं और इस संबंध में उसके विशेषाधिकारों का समर्थन करते हैं। जैसा कि अब्दुल-बहा ने कहा है, "वास्तव में माताएँ ही अपने बच्चों की प्रसन्नता, महान भविष्य, विनम्र तरीके और सीख और निर्णय, समझ और आस्था का निर्धारण करती हैं।" तथापि, पिता भी उनकी शिक्षा और पालन-पोषण की जिम्मेदारी उठाता है, और इस महत्वपूर्ण कर्तव्य से किनारा कर इसे माँ के ऊपर अकेले ही नहीं छोड़ सकता। और जबकि, इस भूमिका में माँ का सहयोग करना और यह सुनिश्चित करना कि इस कारण उसे किसी प्रकार की प्रतिकूलता का सामना ना करना पड़े, पिता परिवार को आर्थिक रूप से सहायता करने का अनुवर्ती दायित्व संभालता है, इसका अर्थ यह नहीं है कि यह भूमिकाएँ अडिग रूप से तय हैं। पवित्र शिक्षाओं की अपनी समझ के आधार पर, दंपति अलग-अलग व्यक्तिगत और सामाजिक परिस्थितियों के प्रत्युत्तर में परिवार के मामलों को प्रबंधित करने का सबसे अच्छा तरीका निर्धारित करते हैं। विवाहित जीवन का प्रत्येक चरण संबंधित चुनौतियों और अवसरों को प्रस्तुत करेगा, इस बात को सुनिश्चित करते हुए कि पत्नी और पति दोनों की आध्यात्मिक, बौद्धिक और व्यावसायिक प्रगति हो, दंपति को सहयोगात्मक और प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने का प्रयास करना चाहिए।

परिवार के सहयोगात्मक वातावरण में, माता-पिता अपने बच्चों को भक्ति, सद्‌गुण और सेवा का सार्थक और उद्देश्यपूर्ण जीवन जीना सीखने के लिए ध्यानपूर्वक मार्गदर्शन देते हैं। इस उद्देश्य से, अपने उदाहरण और अपने दैनिक जीवन और परस्पर क्रिया के पैटर्न के साथ-साथ अनगिनत वार्तालापों के माध्यम से, माता-पिता अपने बच्चों में बढ़ती जटिलता के साथ आध्यात्मिक गुणों, अभिवृत्तियों, आदतों और सक्षमताओं का, शैश्वावस्था से लेकर परिपक्वता तक बाल विकास के हर चरण में, उनके तरीकों और दृष्टिकोणों को अपनाते हुए, प्रेमपूर्ण पोषण करते हैं। कम आयु से ही बच्चे ईश्वर की ओर उन्मुख होना और

उससे प्रेम करना, प्रार्थना करना और प्रतिदिन ईश्वर के लेखों का पाठ करना, स्वयं को आध्यात्मिक गुणों को विकसित करने का प्रयास करती कुलीन आत्मा के रूप में देखना, स्वयं से पहले दूसरों को प्राथमिकता देना और इन गुणों को देखभाल और सहयोगात्मक संबंधों में व्यक्त करना सीखते हैं। जैसे-जैसे वे आगे बढ़ते हैं, वे कठिनाई के आदी होने, आत्म-अनुशासन और जवाबदेही का अभ्यास करने, स्वयं को भुला देने और कला एवं विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना सीखते हैं। और जैसे-जैसे वे अपने बलबूते पर दुनिया में कदम रखते हैं, वे सेवा की अभिवृत्ति विकसित करने, ईश्वरीय शिक्षाओं को फैलाने और लागू करने, मतभेदों को सुलझाने और परामर्श में भाग लेने, संविदा में दृढ़ रहने, विश्व की बेहतरी के लिए काम करने, और स्वयं को को उन चीजों की ओर निर्देशित करना सीखते हैं जो अनंत सम्मान की ओर ले जाती हैं। बहाई लेख माता-पिता को अंतर्दृष्टि का एक असीम स्रोत प्रदान करते हैं जिसके साथ वे इन और कई अन्य महत्वपूर्ण अभिवृत्तियों, कौशल और योग्यताओं को विकसित कर सकते हैं, और प्रशिक्षण संस्थान इसके सभी सदस्यों की समझ और सक्षमताओं को बढ़ाकर परिवार के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करता है। युवा लोगों की भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक शिक्षा में सहायता के लिए अन्य संसाधन भी उपलब्ध हो सकते हैं जिनका परिवार लाभ उठा सकता है - स्कूल, सामुदायिक जीवन, सेवा परियोजनाएँ, इत्यादि। तथापि बच्चों की उचित और पूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की अंतिम जिम्मेदारी माता-पिता पर ही रहती है।

जैसे-जैसे समय बीतता है, परिवार के सदस्यों के बीच संबंध विकसित होते हुए आगे बढ़ते हैं और अलग-अलग रूप लेते हैं। भाई-बहनों के बीच प्यार और एकता के सावधानीपूर्वक पोषित बंधन जीवन भर समर्थन और उत्थान प्रदान करते हैं, और परिवार के जीवन में उत्पन्न होने वाली छोटी-मोटी ईर्ष्या और विभाजन के खिलाफ एक सुरक्षा कवच के रूप में काम करते हैं। स्पष्ट रूप से, वयस्क बच्चों के अधिकार और ज़िम्मेदारियाँ वैसी नहीं होती हैं जैसी तब थीं जब वे छोटे थे। माता-पिता को ऐसे बदलावों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए क्योंकि वे अपने बच्चों को परिपक्वता के लिए तैयार करते हैं, और बड़े होने पर अगली पीढ़ी के भीतर स्वायत्तता और ज़िम्मेदारी को ध्यान से बढ़ावा देते हैं। युवा लोग अपने पूरे जीवनकाल में अपने माता-पिता का सम्मान और आदर करना जारी रखते हैं, फिर भी जैसे-जैसे वे परिपक्व होते हैं, उन्हें अपने जीवन और विकल्पों को चुनने का उत्तरदायित्व स्वयं लेना चाहिए। समय के साथ, दायित्व बदलते हैं, और माता-पिता की उम्र के बढ़ने के साथ परिस्थितियां बच्चे को अधिकाधिक सहायता हेतु पुकार सकती हैं।

एकल परिवार के संबंध, संबंधों के व्यापक दायरे में समाहित होते हैं जिनका प्रारंभ विस्तृत परिवार से होता है। दादी-दादा, नानी-नाना, चाची-चाचा, मौसी, मामा और चचेरे-ममेरे-फुफेरे भाई-बहन देखभाल और सहायता प्रदान करते हैं जो परिवार के उद्देश्य और जिम्मेदारियों को पूरा करने में मदद करते हैं। ऐसे पारिवारिक रिश्तों की विशेषताएं बहाई सहजनों और अन्य मित्रों तक भी फैली हुई हैं, जो विभिन्न तरीकों से एक परिवार की सहायता कर सकते हैं। एक जीवंत समुदाय में बनाए गए घनिष्ठ सामाजिक नेटवर्क में बुजुर्ग, दृढ़ीकरण कक्षाएं, बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह, और विशिष्ट उदाहरण उपलब्ध कराते हैं। अन्य लोग आध्यात्मिक चाचा-चाचियों, मामा-मौसियों के रूप में युवा जनों की प्रगति के लिए स्नेह और चिंता साझा करने और माता-पिता के परिश्रम और उच्च आकांक्षाओं को मजबूत करने वाले समर्थन प्रदान करने के लिए आगे आते हैं। युवा बड़े भाई-बहनों के रूप में अनेक तरीकों से अपने से छोटों को सहायता और प्रेरणा प्रदान करते हैं। इस तरह, एकता, प्रेम, देखभाल, विश्वास और एकजुटता की भावना जो प्रारंभ में परिवार में विकसित होती है, समुदाय में रिश्तों के ताने-बाने में बुनी जाने लगती है।

वित्तीय मामलों पर ध्यान देना एक सुसंगत और समृद्ध पारिवारिक जीवन और एक बढ़ते समुदाय में परिवार की भागीदारी का एक अनिवार्य पहलू है। पत्नी और पति के बीच और जैसा उचित हो, बच्चों के साथ परामर्श से यह तय होगा कि यह भौतिक चिंता पारिवारिक जीवन की कई अन्य विशेषताओं और दायित्वों के साथ कैसे संतुलित की जाए। परिवार के बुद्धिमत्तापूर्ण और चौकस वित्तीय प्रबंधन में कई बातों को ध्यान में रखना चाहिए, जिसमें शामिल है कि धन का अर्जन, व्यय और बचत किस प्रकार की जाए; बच्चों की शिक्षा और कल्याण को कैसे बनाए रखा जाए; प्रभुधर्म के कोष के लिए या सामुदायिक मामलों में मदद के लिए कितना आवंटित किया जाए; और ईश्वराधिकार(हुकूकुल्लाह) के दायित्व का निर्वहन कैसे किया जाए। इन और ऐसे अन्य सवालों के प्रत्युत्तर में, उदारता, जिम्मेदारी, आवश्यकताओं और लालसाओं के बीच अंतर और भौतिक साधनों के प्रबंधन के बारे में व्यवहार में सीखने के लिए परिवार एक अवसर प्रदान करता है।

*

बहाई पारिवारिक जीवन व्यापक समाज के साथ गतिशील अन्तर्क्रिया के लिए एक मंच उपलब्ध कराता है। यह अन्तर्क्रिया तब फलती-फूलती है जब परिवार के सदस्य अपने जीवन में मूलभूत बहाई शिक्षाओं को व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, पूर्व में उल्लेखित स्त्री और पुरुष की समानता के सिद्धांत को लागू करना, पत्नी और पति के साथ-साथ बच्चों और पूरे परिवार के बीच एक विशिष्ट संबंध बनाता है, और यह परिवार के सदस्यों को समाज में अन्तर्क्रिया में योगदान करने के लिए तैयार करता है जो सभी की क्षमता को निर्मुक्त करता है। इसी तरह, मानवता की एकता के सिद्धांत का पालन करने के लिए आवश्यक है कि बच्चों को ऐसे अनुभव प्रदान किए जाएं जो उन्हें सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से बचाएं और विविधता की उनकी समझ को बढ़ाएँ, जो विभाजित दुनिया में एकता और एकरूपता के संबंध बनाने की क्षमता में योगदान देते हैं। इसके अलावा, सत्य की खोज करने, विज्ञान और धर्म के सामंजस्य की सराहना करने, मतभेदों को सुलझाने, और विवाद और प्रतिस्पर्धा के बजाय परामर्श और सहयोग के माध्यम से निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा देना, सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में परिवार के सदस्यों को प्रभावी नायक के रूप में सशक्त बनाता है। और परिवार के सदस्यों के बीच न्याय और करुणा जैसे गुणों का विकास बच्चों को समाज में दूसरों के साथ स्वस्थ और संतुलित संबंध स्थापित करने के लिए तैयार करता है। इस प्रकार, परिवार के भीतर दिव्य शिक्षाओं को लागू करने का प्रयास बच्चों के भीतर एक ऐसा दृष्टिकोण उत्पन्न करता है जो परिवार से परे जाता है और विश्व के लोगों की स्थितियों और आवश्यकताओं के बारे में चेतना बढ़ाता है।

पारिवारिक जीवन के नए पैटर्न को विकसित करने से विघटन की शक्तियों का भी सामना होता है जो संक्रमणकाल का एक अविभाज्य चिन्ह है। समाज पर हमला करने वाली इन शक्तियों ने खास तौर पर परिवार को प्रभावित किया है, इसके संबंधों को तोड़ दिया है और इसके सदस्यों, विशेष तौर पर बच्चों पर भारी दुष्प्रभाव डाला है। वे परिवार के सदस्यों को कुछ सबसे विनाशकारी सामाजिक विकृतियों के संपर्क में ला सकते हैं: प्रेम और देखभाल की कमी, आध्यात्मिक चीजों की उपेक्षा, अमानवीयता, निर्धनता, असुरक्षा और हिंसा। व्यक्ति भौतिक विकर्षणों या व्यक्तिगत संतुष्टि के जीवन के लिए समर्पण करने के प्रति ललचाये जाते हैं, जिससे वे समाज पर अपनी योजनाएं थोपने वालों द्वारा जोड़तोड़ की जाने वाली वस्तु मात्र बन जाते हैं। मानवता की एकता और शांतिपूर्ण विश्व के आदर्शों के साथ असंगत, विपरीत विचारधाराएँ और पहचान, जनता की निष्ठा के लिए होड़ करती हैं और एक दूसरे के साथ श्रेष्ठता के लिए

संघर्ष करती हैं। इनमें से कुछ अभियान पूर्वाग्रह और कट्टरता के बीज बोते हैं जो अंततः विश्व के लोगों के बीच अलगाव, संघर्ष और विवाद को जन्म देते हैं। अन्य लोग दिव्य शिक्षाओं के कुछ पहलुओं का अनुपालन करते हुए प्रतीत हो सकते हैं, पर वे मित्रों को बहाउल्लाह के सीधे मार्ग से सूक्ष्मतापूर्वक दूर ले जाते हैं। विघटन की प्रक्रिया से जुड़ी शक्तियां अलग-अलग जनसमुदाय को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करती हैं। परिवार और पूरे समुदाय को मौजूदा परिस्थितियों की जांच करना सीखना होगा, ऐसी शक्तियों की प्रकृति और प्रभाव को समझना होगा, और दिव्य सहायता पर पूर्ण निर्भरता के साथ, एक खतरनाक युग के अशांत तूफानों का सामना करने के लिए निवारक और उपचारात्मक उपाय विकसित करने होंगे।

परिवार के सदस्यों का आपस में घनिष्ठ सहयोग और दूसरों की सेवा करने की उनकी ईमानदार अभिलाषा एक अद्वितीय सामाजिक स्थान उपलब्ध कराती है: एक बहाई घर। एक जीवंत बहाई घर जमीनी स्तर पर समुदाय निर्माण की प्रक्रिया में एक अपूरणीय तत्व है। घर के प्रेमपूर्ण वातावरण में, परिवार के सदस्य दिव्य योजना के सक्षम और आत्मविश्वास से भरे नायक बनने में एक-दूसरे का सहयोग करते हैं, और वे समाज को बदलने में भूमिका निभाने के लिए दूसरों का स्वागत और सहायता करते हैं। एक बहाई घर में, गर्मजोशी से भरा आतिथ्य आध्यात्मिक उत्साह और बौद्धिक प्रगति के साथ जुड़ा होता है। हर बहाई परिवार अपने घर में जो गतिविधियाँ कर सकता है, उनके माध्यम से वह जीवन का एक ऐसा तरीका प्रदर्शित कर सकता है जिसका अनुकरण उन सभी लोगों द्वारा किया जा सकता है जो असंतोष, संघर्ष और स्वार्थ को बढ़ावा देने वाली विभाजनकारी ताकतों का मुकाबला करना चाहते हैं, और विश्वास, सहयोग और रचनात्मक कार्रवाई के बंधन बुनना चाहते हैं जिस पर एक स्वस्थ समुदाय निर्भर करता है। वास्तव में, विश्व भर में कई प्रकार के समुदाय-समूहों में, परिवारों के समूह पहले से ही अपने घरों को खोल रहे हैं और स्थानीय गतिविधियों को सुदृढ़ करने और अपनी पहुँच और प्रभाव को बढ़ाने में मदद करने के लिए एक साथ काम कर रहे हैं।

सेवा के सुसंगत जीवन की अवधारणा परिवार के जीवन के लिए उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि एक व्यक्ति के जीवन के लिए। परिवार के सामने आने वाली जटिल मांगें और अवसर समय के साथ लगातार विकसित होते रहते हैं। आम तौर पर, सेवा के मार्ग पर एक साथ आगे बढ़ने से परिवार मजबूत होता है, और यह सदस्यों के जीवन के हर चरण में अपने अनेक उत्तरदायित्वों को पूरा करने में मदद करता है। उस समय जब अधिक मांगों वाली सेवा करने की संभावना पैदा होती है - चाहे किसी सदस्य के लिए या पूरे परिवार के लिए - एक समर्पित बहाई परिवार के भीतर समर्थन के बंधन पूरे हृदय से ऐसे त्यागपूर्ण प्रयास को अपनाना संभव बना सकते हैं। ऐसे समय में त्याग की आवश्यक प्रकृति को ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है, जिसे अब्दुल-बहा ने समझाया है, ईश्वर की वस्तुओं के लिए मानवीय स्थिति की चिंताओं को त्यागना। त्याग से बड़ी सेवा संभव होती है, लेकिन इसके लिए स्वयं परिवार का ही त्याग नहीं कर देना चाहिए।

*

जब हम नौ वर्षीय योजना की प्रगति का सर्वेक्षण करते हैं, हम मित्रों के समर्पित परिश्रम के प्रति विस्मय और गहरी प्रशंसा से भर जाते हैं। दुनिया भर में विभिन्न परिस्थितियों वाले स्थानों पर, हम व्यक्तियों, समुदायों और संस्थाओं के सहयोग से उत्पन्न होने वाले त्यागपूर्ण प्रयासों की एक श्रृंखला को देखते हैं, जब मित्र समुदाय निर्माण की प्रक्रिया में उत्सुक जन-समुदाय को सम्मिलित करते हैं, शिक्षा और

सामाजिक बेहतरी के लिए कई तरह की परियोजनाओं का प्रारंभ करते हैं, प्रभुधर्म के काम को नए स्थानों पर ले जाते हैं, और सेवा के सुसंगत जीवन में निहित कई प्रतिबद्धताओं का समन्वय करते हैं। और उत्पीड़न की बाधाओं या अव्यवस्थित दुनिया की उथल-पुथल के बावजूद, मित्र अपने उच्च लक्ष्यों की ओर दृढ़ता से बढ़ते रहते हैं। विश्व भर में अनगिनत आत्माएँ, अपनी परिस्थितियों और क्षमताओं की सीमाओं के भीतर, प्रभुधर्म की समाज-निर्माण शक्ति को और अधिक मात्रा में निर्मुक्त करने का प्रयास कर रही हैं। इन उद्देश्यों की ओर, आने वाले वर्षों और दशकों में बहाई परिवारों द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका अधिक से अधिक आवश्यक और प्रभावशाली होगी। बहाई जीवन के इस आवश्यक घटक को मजबूत करने के लिए सभी मित्रों को महत्वपूर्ण योगदान देना है।

"मेरा घर शांति का घर है", बताते हैं कि अब्दुल-बहा ने कहा था। "मेरा घर आनंद और प्रसन्नता का घर है। मेरा घर हंसी और उल्लास का घर है। जो कोई भी इस घर के द्वार से प्रवेश करता है, उसे प्रसन्न हृदय से बाहर जाना चाहिए। यह प्रकाश का घर है; जो कोई भी यहाँ प्रवेश करता है, उसे प्रकाशित होना चाहिए।" प्रिय मित्रों, आपके परिवार और घर, मानवता को बनाए रखने के लिए अधिकाधिक एक आश्रय और स्तंभ बनते रहें।

विश्व न्याय मंदिर